अलीपुर गांव में शिक्षा

❑ पद्मा एम. सारंगपाणि

अनुवाद : रामकुमार सिंह

शिक्षा की परिभाषाएं इसे एक उदात्त, अत्यंत व्यापक और उत्कृष्ट प्रक्रिया के रूप में व्याख्यायित करती हैं। उन परिभाषाओं में रचा गया आदर्श सामान्यत: लगभग आलौकिक और लुभावना होता है या फिर अमूर्त और उलझा हुआ । जब आप जमीनी स्तर पर शिक्षा की किसी प्रक्रिया को घटित होते देखते हैं तो अक्सर आदर्श और चिंतन छिन्न-भिन्न हो जाते हैं । प्रस्तुत लेख - शृंखला हमें कुछ ऐसा ही 'झटकेदार अनुभव' देती है । यहां शिक्षण 'छाया' अनुकरण में तब्दील होता दिखता है और समूचा शैक्षिक उपक्रम कोई आरामतलब नौकरी पाकर 'बड़े आदमी' बनने के लक्ष्य में घट जाता है ।

अलीपुर, दिल्ली से 17 किलोमीटर उत्तर की ओर जी.टी. रोड़ पर स्थित एक गांव है । 1981 से जनगणना के हिसाब से उसे कस्बा माना जा चुका है । इसके दूसरे गांव गढ़ी के साथ इसकी जनसंख्या दस हजार से भी ज्यादा है । यह जाट जाति बाहुल्य गांव है इसलिए इसे जाटों का गांव माना जाता है। दिल्ली नरेला और सोनीपत के लिए यहां से अच्छी बस सेवाएं उपलब्ध हैं । यह तेजी से विकास कर रहा है, बहुत सी कृषि भूमि पर निर्माण कार्य हो रहे हैं और मकानों की नए मॉडल्स के अनुसार मरम्मत और निर्माण कराया जा रहा है। किराया कम होने के कारण दिल्ली में काम करने वाले लोग यहां आकर रहने लगे हैं। मुख्य सड़क पर अच्छी खासी दुकानें बन गई हैं और गांव के केन्द्र में बाजार काफी व्यस्त है।

बस, लारियों, कारों, स्कूटर एवं साइकिलों का आवागमन काफी हो गया है। छोटी-छोटी दुकानों और चाय की थड़ियों पर बैठे जवान और बूढ़े लोग आने-जाने वालों को देखते रहते हैं । मुख्य सड़क से यह गांव आसपास फैले उन गांवों से किसी भी मायने में भिन्न नहीं लगता जो दिल्ली महानगर में समा गये हैं।

कुछ माह पहले तक मैं गांव की मुख्य सड़क को ही जानती थी। मैं गांव के सरकारी प्राथमिक विद्यालय में जाती थी और बच्चों के साथ समय बिताती थी । उन्हें सुनती थी, उनका अवलोकन करती थी और उनके साथ कागज के खिलौने बनाती थी।

एक दिन, पांचवी कक्षा के एक विद्यार्थी नवीन ने गांव के प्रति मेरी उत्सुकता को देखते हुए मुझे अपने घर बुलाया । स्कूल के बाद उस दिन दोपहर को नवीन एवं कुछ और बच्चों के साथ मैं मुख्य सड़क से उसके घर गयी। बच्चे यह जानकर कि मैं उनकी स्कूल के किसी साथी के घर जा रही हूँ, बड़े उत्सुक हुए और मुझे बहुत सारे निमंत्रण मिले । नवीन मुझे मुख्य बाजार के क्षेत्र और छोटी गलियों में ले गया । कुछ कदम चलने पर मैंने स्वयं को एक 'वास्तविक गांव' में पाया । हम एक संकड़ी गली से गुजरे । यह लगभग पांच फीट चौड़ी थी और दोनों तरफ सफेदी से पुते मकान थे जिनके दरवाजे गलियों में खुल रहे थे । गली के दोनों तरफ खुली

सीवर नालियां बह रही थीं । सर्दी का मौसम था । कुछ औरतें और बूढ़े आदमी घरों के बाहर चारपाई पर बैठे धूप सेंक रहे थे और हुक्के पी रहे थे । सलवार कुर्ते पहने और दायीं और दुपट्टा लगाए कुछ औरतें हरे घास का गट्ठर 'घेर' में बंधी भैंसों के लिए ला रही थीं। बच्चे गली में खेल रहे थे । उनमें बहुतों ने अभी भी स्कूल ड्रेस पहन रखी थी । इस सारे दृश्य को मैंने उत्सुक्तता से देखा और लोगों ने भी मेरी तरफ इसी तरह देखा । नवीन ने विशाल नीम के वृक्ष के नीचे बने चबूतरे की ओर संकेत करके बताया कि यह 'जाट चौपाल' है । उसने बताया कि हरिजन चौपाल बाजार के क्षेत्र से आगे है जहां चूड़ा और चमार रहते हैं । पहले वह गांव की बाहरी सीमा थी । हालांकि स्कूल में चमारों के बच्चे भी उनके दोस्त थे। लेकिन जब मैंने उससे उनके साथ खेलने के लिए पूछा तो उसने नाक सिकौडी और अपना सिर हिला दिया।

इस गली में जाटों और कुछ ब्राह्मणों के परिवार थे । नाई और कुम्हार अलग क्षेत्र में थे । ज्योंही हम एक द्वार के पास पहुंचे, अचानक नवीन कुछ सकुचाता हुआ प्रतीत हुआ। मुझे बुलाते हुए वह अन्दर गया । हम उसके घर के भीतर संकड़ी सीढ़ियों से चढ़े। सामने कुछ खुला क्षेत्र था तथा पीछे दो कमरे थे। दो जवान औरतें वहां थी । मैंने उन्हें 'नमस्ते' कहा, नवीन ने उन्हें बताया 'ये हमारी स्कूल की दीदी हैं।' और मुझे वहां अपनी दो बड़ी बहनों के साथ छोड़कर तेजी से गायब हो गया । कुछ देर मामूली हिचकिचाहट रही और मेरे बारे में पूछताछ होती रही कि क्या मैं नवीन की शिकायत करने आई हूं । बाद में उन्होंने सहज बातचीत शुरू की। गांव के बारें में जानकारी लेने के लिए तथा चूल्हे पर बने बाजरे की खिचड़ी, रोटी और साग युक्त उनके रात्रि भोज में शामिल होने के लिए मैं उनके घर नियमित जाने लगी । अलीपुर के कई बच्चे और शिक्षकों से स्कूल के विजिट्स के माध्यम से मेरी पहचान हुई । वहां लड़के और लड़कियों के लिए मुख्यत: दो सरकारी प्राथमिक विद्यालय थे और एक गैर-सरकारी पाठशाला थी । बच्चों के साथ कागज के खिलौने बनाने के साथ साथ मैं अपना पूरा समय सभा और कक्षाओं के पर्यवेक्षण और बच्चों से बात करने में बिताने लगी। बच्चों के घर जाने से गांव के लोगों और उनके जीवन के बारे में मेरी जानकारी में वृद्धि हुई । सात महीने कक्षा चार व पांच के बच्चों के अवलोकन व वार्तालाप तथा शिक्षकों और गांव के अन्य लोगों से हुई बातचीत के आधार पर मैंने अपना पर्यवेक्षण पूरा किया । मैं समझने की कोशिश कर रही थी कि बच्चों के लिए शिक्षा और विद्यालय का मतलब क्या है ? और पाठशाला के अनुभवों को वे क्या अर्थ प्रदान करते हैं । इन लेखों में मैं बच्चों के स्कूल अनुभव के अनेक पक्ष प्रस्तुत करूंगी। यह पहला लेख है और यह स्कूली प्रक्रिया और उद्देश्य के बारे में बच्चे की समझ से जुड़ा है । साथ ही यह गांव में रोजगार के स्वरूप के बदलते परिदृश्य से शिक्षा को जोड़ता है । दूसरा लेख शिक्षक और विद्यार्थी की पहचान और उनके संबंधों को उजागर करता है । तीसरे लेख में कक्षा की प्रक्रियाओं का वर्णन है जिनके जरिये स्कूली ज्ञान दिया जाता है और इसको गैर-स्कूली ज्ञान से अंतत जोड़ा गया है। चौथे लेख में सीखने की प्रक्रिया के रूप में 'स्मरण' के बारे में उल्लेख होगा । और अंतिम लेख स्कूली ज्ञान के प्रति बच्चों की समझ से संबंधित है ।

अलीपुर गांव के बारे में कुछ और

उत्तरी भारत के अन्य गांवों की तरह, अलीपुर गांव की अर्थ व्यवस्था भी कृषि आधारित थी । गांव में जाट जाति की प्रधानता है, और अन्य जातियों में चूड़ा, चमार, ब्राह्मण, तेली, नाई और कुम्हार हैं । इनमें 'जजमानी' प्रथा के अनुसार आर्थिक अन्तर्संबंध और अन्तर्निभरता थी। यह 1950 के दशक तक विद्यमान थी । लेकिन गांव दिल्ली के काफी नजदीक है और बस से यहां आसानी से पहुंचा जा सकता है, इसलिए शहर का असर गांव पर महसूस किया जाने लगा । सबसे पहले कुछ सम्पन्न जाट परिवारों ने कृषि और पशुपालन के कार्य को घरेलू कार्य में बदल लिया ताकि उनके बच्चे गांव की प्राथमिक स्कूल में पढ़ने जा सकें । उन्होंने नजदीक के मिशनरी स्कूल में अपनी स्कूली शिक्षा पूरी की । उनमें से कुछ को सरकारी नौकरी मिली, वे बाबू या अध्यापक बन गए । सरकार की 'हरित क्रांति योजना' से भी गांव को फायदा हुआ । कृषि के लिए अनुदानों, अधिक पैदावार वाले अनाज, खाद और ट्रेक्टर तथा सिंचाई के लिए ट्यूबवैल उपलब्ध हुए । गांव की अर्थव्यवस्था में नकद मुनाफे का प्रवेश हुआ और इसने 'जजमानी' संबंधों को प्रभावित किया ।

जजमान अपने कामीनों को छोड़कर उन्हीं सेवाओं के लिए अन्य सेवकों को पैसा चुकाने लगे । मसलन, स्थानीय नाई के बजाए शहर में बाल कटवाना, कुम्हार से मिट्टी के बर्तनों के स्थान पर स्टील के बर्तन लाना । उसी समय 'कामीन' का कार्य करने वाले लोगों ने जजमानी ढांचे के बाहर रोजगार के नए अवसर हासिल किए । मसलन सफाई कर्मियों (स्वीपर) ने नगर पालिकाओं में नौकरी पाई, कुछ कुम्हारों ने विवाह आदि के लिए अपने बर्तन बनाने के परम्परागत कार्य को जारी रखते हुए ईंटे बनाने पर अपना ध्यान केंद्रित किया । जिन परिवारों ने शहरों में नौकरियों का लाभ लिया, वह जजमानी ढांचे के बाहर शहर में नए फायदे तलाशने के लिए उदाहरण बना । रोजगार के इन रूपों के लिए शिक्षा जरूरी थी। गांव की अन्य जातियों के परिवारों ने अपने बच्चों को स्कूलों में भेजना शुरु किया। और शहर में अपने रिश्तेदारों, मित्र ग्रामीणों और

अन्य मित्रों से सम्पर्क किया ताकि वे उनके बच्चों को माली या बस कन्डक्टर जैसी सरकारी नौकरी दिला सकें । 'नौकरी' के ये स्वरूप परम्परागत धन्धों से भिन्न थे । ये नियमित, स्थायी रोजगार थे, जहां काम के घंटे तय थे और मासिक वेतन निर्धारित था ।

कुछ परंपरागत व्यवसाय जैसे कृषि, पशुपालन, बढ़ईगिरी, जूतों का निर्माण एवं मरम्मत, सफाई कर्म, नए व्यवसायों के साथ-साथ चलते रहे, फिर भी कम होते गए । लगभग पचास से सत्तर बच्चों के परिवारों में मैं गई और पाया कि बहुत कम लोग अपने परम्परागत रोजगार से जुड़े थे । और ऐसे परिवारों के पास भी मौका गंवाने अथवा दूसरे भाई की पढ़ाई के लिए अपनी पढ़ाई का बलिदान करने की कई कहानियां थीं ।

हाल ही, आय के अन्य रूप भी गांव की अर्थव्यवस्था में प्रविष्ट हुए हैं । जमीन अब कीमती हो गई, उसकी गणना कृषि उद्देश्यों के बजाय पूंजीगत संपत्ति के रूप में की जाने लगी है । बाहर से आए बहुत से लोगों ने किराए पर मकान लिये हैं । और गांव वालों को आय का अतिरिक्त साधन दिया है । गांव में संपत्ति संबंधी मामलों के अनेक एजेन्ट हैं । गांव में ही अब एक बाजार विकसित हुआ है । लघु उद्योग और छोटे व्यवसायी भी पनपने लगे हैं।

वास्तव में 1991 के आंकडे बताते हैं कि केवल 19 प्रतिशत ग्रामीण लोग ही कृषि से जुड़े हैं, (1994 में कृषि योग्य भूमि 50 प्रतिशत रही जबकि 1971 में यह 70 प्रतिशत थी ।), करीब 40 प्रतिशत 'नौकरी' जैसे रोजगारों में लगे हैं और लगभग 40 प्रतिशत के निजी उद्योग हैं। अलीपुर की तस्वीर वही है जो महानगर के प्रभाव से एक परम्परागत गांव के परिवर्तन को दर्शाती है । गांव की जिन्दगी में मुख्य परिवर्तन ने रोजगार के स्वरूप को बदला है । रोजगार के नए स्वरूप की स्वीकृति के साथ यह परंपरागत क्षेत्र से बाहर और भिन्नता लिए हुए भी है । इसने सामाजिक सुरक्षा और निजी सामाजिक प्रगति करने के अवसर दिये हैं ।

बच्चे के लिए 'पढ़ाई' का मतलब क्या है ?

हिंदी शब्द 'पढ़ाई' कई तरह से और कई अर्थों में प्रयुक्त होता है । 'पढ़ना' (क्रिया); 'पढ़ाई' (संज्ञा)- स्कूल जाना, शिक्षा, शिक्षण, पाठ पढ़ाना; 'पढ़ाई करो' (क्रिया)-अध्ययन - 'पढ़ा लिखा' (संज्ञा/क्रिया विशेषण)- शिक्षित, जो स्कूल गया है 'पढ़ लेना' (क्रिया)-पढ़ने की क्षमता रखना- इसके विलोम में 'अनपढ़' (संज्ञा)- अशिक्षित-निरक्षर; आदि । इस भाग में 'पढ़ाई' का मतलब शिक्षा के बजाय स्कूल जाने के अधिक नजदीक समझा जाता है ।

- क्यों पढ़ते हो ?

विकास : बिना पढ़ाई के नौक़री नहीं लग सकती ।

रवीन्दर : 'सरकारी नौकरी के लिए पढ़ाई जरूरी है।

- क्यों ?

रवीन्दर: अंग्रेजी में बोलना जरुरी है, बस नम्बर..., पता नहीं।

अजय : अब छोड़ता भी हूँ तो मैं पिताजी की दुकान में बैठ सकता हूँ ।

- तो क्यों पढ़ते हो ?

अजय : छोटा काम है (दुकान पर बैठना)

- 'छोटा काम' क्या होता है ?

अजय : आपको जमीन पर बैठना पड़ता है और बकाया चुकाना है।

- (सलीम से) आपके पिताजी क्या करते हैं ?

सलीम : पुताई करते हैं ।

- क्या तुम यह नहीं करोगे ?

सलीम : बहुत ज्यादा मेहनत लगती है । और काम खतरे का है ।

- (कुलदीप के पिताजी पेशे और जाति से नाई हैं)- तुम क्या करोगे ?

कुलदीप : नौकरी चाहता हूँ ।

विकास : मुझे सरकारी नौकरी चाहिये ।

- सभी सरकारी नौकरी क्यों चाहते है ?

सलीम : क्योंकि इसमें कोई परेशानी नहीं है ।

विकास : चार या पांच घंटे काम करना होता है ।

सलीम : ज्यादा पढ़ाई से अच्छी नौकरी मिलनी चाहिए ।

- वो कैसे ?

सलीम : लोग सोचेंगे, मैं बहुत ज्यादा पढ़ा हूं तो अच्छी नौकरी करना चाहिये ।

- किस प्रकार की नौकरी (अच्छी) है ?

सलीम : सरकारी नौकरी अच्छी है । इसमें कुर्सी पर आराम से बैठे रहो ।

विकास रवीन्दर को बताता है ''प्राइवेट नौकरी में ठीक नहीं है । बीस तीस रुपया महीना मिलते हैं । क्या तुम उनसे गुजारा कर सकते हो ? उनसे शादी कर सकते हो ?

(यह बातचीत छात्रों के स्कूल में पांचवी कक्षा के लड़कों से की गई)

सभी बच्चों के लिए पढ़ाई एक तरह से वयस्क के रूप में काम काज के लिए तैयार होने की प्रक्रिया है । वे सब महसूस करते हैं कि नौकरी के लिए पढ़ाई आवश्यक है । विशेष रूप से, वे यह सोचते हैं कि स्कूल जाने से रोजगार के रास्ते खुलते हैं । विकास के पिताजी एक प्राइवेट कंपनी में नौकरी करते हैं लेकिन वह सरकारी

नौकरी चाहता है । वह महसूस करता है कि उन्हें पर्याप्त भुगतान नहीं होता । कुलदीप के पिताजी अभी परम्परागत नाई का पेशा करते हैं लेकिन वह खुद नौकरी चाहता है । सलीम जिसके पिताजी पुताई करते हैं, ऐसी नौक़री चाहता है कि जिसमें ज्यादा मेहनत ना करनी पड़े । अजय के पिताजी एक दूध की दुकान चलाते हैं। पर वह इसे 'छोटा काम' मानता है और वह सरकारी नौकरी चाहता है जहां स्थिति बेहतर होगी।

इन सारे मामलों में बच्चे नौकरी के लिए उत्सुक हैं और सभी यथासंभव अपने पिता से बेहतर कार्य करना चाहते हैं । प्रथम, नौकरी वह है जो अनिवार्यत: परम्परागत कार्य नहीं है । साथ ही, वे असंगठित क्षेत्र के रोजगार से बचना चाहते हैं, वे नियमित वेतन और तय काम के घटों के साथ सम्मानजनक काम पाना चाहते हैं जिसे वे 'नौकरी' कहते हैं । सरकारी नौकरी को प्राथमिकता देने की वजह यह भी है कि उसमें कम मेहनत करनी पड़ती है। इस सबके लिए वे शिक्षा (पढ़ाई) को जरूरी मानते हैं । पढ़ाई निजी प्रगति के लिए माध्यम उपलब्ध कराती है।

बहुत से बच्चे जिनके पिता संगठित क्षेत्रों और सरकारी नौकरियों में थे, मानते थे कि पढ़ाई के जरिये वे बड़े आदमी बन पायेंगे ।

- क्या तुम बड़े स्कूल में जाओगे ?
सुधीर : हां मुझे जाना है वहां काम भी बढ़ेगा ।
- तुम ऐसा क्यों करना चाहते हो?
''मैं इससे बडा अफसर बन सकता हूँ ।
(लड़कों के स्कूल में चौथी कक्षा के बच्चों से बातचीत)

सलीम के मुताबिक जैसा कि पिछली बातचीत में आया था, एक बड़ा आदमी कुर्सी पर बैठता है । बच्चों ने अपने लिए एक छवि बनाई है कि वे ऑफिस में कुर्सी पर बैठ कर काम कर रहे हैं, फाइलें देखते हैं और अंग्रेजी बोल रहे हैं । लोग उनका नाम जानते हैं और प्रभावित होते हैं । इस तरह की नौकरियां तभी मिल सकती हैं जब वे अपनी पढ़ाई जारी रखें, सफलतापूर्वक उत्तीर्ण हों और अंग्रेजी सीखें । प्राइवेट स्कूलों में पढ़ने वाले लड़के बड़ा आदमी बनना चाहते हैं। सरकारी स्कूलों में पढ़ रहे वे बच्चे, जिनके पिता क्लर्क या उससे ऊपर की सरकारी नौकरियों में हैं, भी 'बड़े आदमी' बनना चाहते हैं ।

जाट समुदाय के बच्चे यह मानते हैं कि उनका परम्परागत व्यवसाय खेती वे लोग ही करते हें जो पढ़ नहीं पाए । बच्चों की कही बात को साक्ष्य के रूप में लिया जा सकता है, ''जो हमसे ज्यादा बड़े हैं, जो पढ़ नहीं सकते, वे खेती करते हैं । (चौथी कक्षा के छात्र जोगी का कथन) । 'जो फेल हो जाते हैं वे खेती करते हैं। (प्राइवेट स्कूल की छात्रा रेणु का कथन) । नीचे बताई गई बातचीत में विनोद को लगता है कि गांव में खेती का काम घट रहा है । (यह वास्तव में सही भी है) रोजगार के अन्य माध्यम प्रदान कर सकने के लिए पढ़ाई जरूरी हो गई है ।

(लड़के व लड़कियां दोनों ही लड़कियों की शिक्षा को भी रोजगार से जोड़ते हैं और इसी को तर्क के रूप में रखते हैं। 'वे (लड़कियां) भी नौकरी पा सकती हैं' (चौथी कक्षा का सूर्य प्रकाश कहता है ।) लेकिन लड़कियों के 'बड़े आदमी' बनने की आकांक्षा से वे सभी सहमत नहीं हैं । कुछ सहमत तो हैं । कुछ लड़कियों के मामले में शादी को रोजगार से ऊपर रखते हैं और ससुराल वालों की इच्छा पर आगे का मामला निर्भर मानते हैं । यदि वे (ससुराल के लोग) सहमत हैं, तो वह ऐसे व्यवसाय की आंकाक्षा रख सकती है जिससे वह 'बड़े आदमी' बन सकती है ।

- क्या आदि मानव पाठशाला जाता था ?
विनोद : नहीं
- तो फिर तुम पाठशाला क्यों जाते हो ?
'क्योंकि खेती बची नहीं है । वे तो खेती किया करते थे ।'
- खेती के लिए पढ़ाई क्यों जरुरी नहीं है ।
क्योंकि यह (खेती) तो अपने आप आ जाती है। आप बीजों की बुआई स्वयं कर सकते हैं । (पांचवी कक्षा का छात्र)।

चमार और चूड़ा आदि निचली जातियों के बच्चे और प्रवासी श्रमिकों के बच्चे भी परम्परागत व्यवसायों के विकल्प नहीं चुन सकते थे । क्योंकि या तो वे व्यवसाय घट रहे थे या उपलब्ध नहीं रहे। पहले के समय में स्कूल जाने की जरूरत क्यों नहीं थी, इसकी व्याख्या चौथी कक्षा में फेल हुए 'चूड़ा' विद्यार्थी सोनू ने दार्शनिक अंदाज में की, ''वो अनपढ़ का जमाना था''- अब समय बदल गया है । सरकारी स्कूलों में कक्षा चार और पांच में फेल हुए ज्यादातर बच्चे इन्हीं जातियों में से थे । वे मानते हैं कि पढ़ाई के बाद नौकरी करने के अतिरिक्त अन्य पेशों में जिन्दगी संघर्ष भरी और प्रतिष्ठा रहित है । उन्हें मुश्किलों भरे काम मिलेंगे और पूछ पूछ कर काम करना पड़ेगा तथा बेकार रहना पड़ सकता है और ठोकरें खानी पड़ेंगी । वे केवल असंगठित क्षेत्र में कठिन शारीरिक श्रम वाला तथा असम्मानजनक काम ही पा सकेंगे । जोगी ने भी अपनी भावना का इजहार किया, जब वह अपनी कक्षा के फैलियर बच्चों के बारे में बता रहा था : ''वे सब जो पिछली पंक्ति में बैठे हैं, (इन्हें) नौकरी नहीं मिलेगी, बोझा उठाना पड़ेगा।''

एक प्रवासी श्रमिक का पुत्र इरशाद जो खुद फेल हो गया

कहता है, जो पढ़ नहीं सकता, उसे चुनाई का काम करना पड़ेगा...मुझे पता है ... मेरे पिताजी करते हैं । नीचे गिर कर चोट लग गयी। नौकरी में गिरते नहीं हैं। पढ़-लिख लोगे तो नौकरी में लग सकते हो ।

दैनिक वेतनभोगी चमार श्रमिक का पुत्र वीरसिंह कहता है - 'यदि मैं इस बार फेल हो जाऊंगा तो करना पड़ेगा । (बर्तन धोने का अभिनय) नहीं समझे ? चाय की दुकान में कप धोना पड़ेगा।' वह अभी तक फेल नहीं हुआ है । लेकिन यदि वह फेल हो जाता है, उसे तुरंत काम शुरू करना होगा और वह चाय की दुकान पर कप और प्लेट साफ करेगा । यह बड़ा नीचा काम समझा जाता है क्योंकि दूसरों के जूठे को अपने हाथ में लेना पड़ता है । यह काम अनियमित भी है और यह मालिक की कृपा पर निर्भर है । भीख मांगने, नीचा काम करने, असुरक्षा, जोखिम और बालश्रम-स्कूल की पढ़ाई द्वारा इनसे बचा जा सकता है ।

बच्चों की इन सारी अभिव्यक्तियों में एक बात स्पष्ट होती है कि वे स्कूल जाने और पढ़ाई करने को मौजूदा बदलते समाज में महत्वपूर्ण और आवश्यक मानते हैं । इससे भी ज्यादा वे सभी स्कूल को ऐसे रोजगार से जोड़ते हैं जिससे वे अपने सामाजिक स्तर को सुधार सकते हैं ... खास कर नए व्यवसायों के अवसर प्रदान करके।

इससे जाहिर होता है कि गांव के लोकाचार, परम्परागत आर्थिक ढांचे और व्यावसायिक संबंधों का क्षरण हो रहा है और एक नया ढांचा विकसित हो रहा है जिसका संबंध शहर के श्रमिक बाजार से है । पढ़ाई इस बाजार को प्राप्त करने की कुंजी के रूप में समझी जाती है। उसे अपनी हैसियत में परिवर्तन लाने के लिए एवं रोजगारों की यथासंभव उपलब्धता के लिए तथा निजी सामाजिक प्रगति के लिए जरूरी समझा जाता हैं । लेकिन पढ़ाई के कौनसे पक्ष हैं जिन्हें बच्चे अपनी नौकरी के लिए महत्वपूर्ण मानते हैं ? उन्होंने किस तरह विश्वास किया कि पढ़ाई उन्हें काबिल बनाती है? क्या उनके लिए सर्टिफिकेट (पास-फेल का) पाना ही महत्वपूर्ण है या उन्हें विश्वास है कि वे ऐसा कुछ सीख जायेंगे जिसे वे नौकरी के लिए उपयोगी पाते हैं ।

पढ़ाई से क्या मिलता है ?

पास-फेल का मामला बहुत-बहुत महत्त्वपूर्ण था । हर बच्चा पास होना चाहता था । फेलयर को 'अनपढ़' समझा जाता था । ऐसा प्रतीत होता था कि उसमें आदर/इज्जत दिलाने वाली किसी बात का अभाव था । शिक्षक द्वारा फेलियर माने जाने वाले धर्मेन्द्र का कहना था कि 'इज्जत बचाने के लिए' पास होना बहुत महत्त्वपूर्ण है । फेल होने का मतलब हास्यास्पद और जलील होना था । फैल होने का ठप्पा बहुत अप्रतिष्ठाजनक था । सूर्यप्रकाश का कहना था कि उनकी कक्षा का विमंदित छात्र 'बकरी' भी पास होने की तमन्ना किसी अन्य से ज्यादा रखता है :

सूर्यप्रकाश : दिल चाहता है कि मैं पास हो जाऊं ।'बकरी' का दिल भी कहता है कि पास हो जाए लेकिन वह फेल हो गया।

- फेल क्यों होते हैं ?
- पढ़ना लिखना नहीं आता।
- यह जरूरी क्यों है ?

कहते हैं - पढ़-लिख नहीं सकते तो किस काम के हो ?

(कक्षा चार के लड़कों से बातचीत)

''पास और फेल'' दो दुनियाओं की विभाजन रेखा है । 'नया संसार' पढ़े-लिखे आदमियों का है । यह संसार सम्मानजनक रोजगार दिला सकता है - नौकरी। इसमें निजी सामाजिक प्रगति और 'बड़े आदमी' बनने की संभावनाएं हैं । 'पुराना संसार' सम्मानजनक नहीं है । यह 'अनपढ़ों' की दुनिया है । इसमें रोजगार के परंपरागत अवसर हैं जैसे खेती, अनियमित दैनिक मजदूरी आदि। यह श्रमसाध्य और असुरक्षित है ।

'पढ़ा लिखा आदमी' बनना :

नीरज : पढ़ाई बहुत जरुरी है

- क्यों ?

नौकरी के लिए ।

- क्यों ?

वो हमें हिंदी और अंग्रेजी में लिखने के लिए कहेंगे ।

- तुम तो पहले से लिखना जानते हो ।

बड़ी बड़ी चीजें नहीं लिख सकता । अंग्रेजी नहीं लिख सकता ।

(चौथी कक्षा के छात्र से बातचीत)

नीरज की तरह बहुत से बच्चे यह महसूस करते हैं कि स्कूल साक्षरता तथा और भी बहुत कुछ सिखाता है । वे कुछ अस्पष्ट से संदर्भों का जिक्र करते हुए यह बताते हैं कि ऊंची कक्षाओं में उन्हें अधिक कठिन चीजें पढ़नी पड़ेंगी, ''हम केवल कक्षा 5 के स्तर तक जानते हैं'' (देवेन्द्र पांचवी कक्षा) । वे सब यह मानते हैं कि पढ़-लिखने की क्षमता ज्यादातर कार्यों के लिए जरुरी है - कागजों को पढ़कर हस्ताक्षर करने के लिए उनका विश्वास है कि पाठशाला का पाठ्यक्रम, नौकरी से संबंध जरुर रखता होगा। वे तर्क देते हैं, ''कौन जाने कि बाद में हमें इन चीजों की नौकरियों में जरूरत पड़ जाये ।'' उनका मानना था कि पढ़ाई जा रही चीजों का रोजगार से कुछ न कुछ संबंध जरुर होगा ।

शिक्षित आदमी होने का मतलब है - बहुत से कौशल सीखना, योग्यता हासिल करना तथा ऐसे कौशल, योग्यता व विशिष्ट ज्ञान को प्रदर्शित करना । इन काबलियतों की महत्ता दर्शाते हुए शिक्षक इन्हें 'पढ़े लिखे आदमी की पहचान' बताते हैं। इन गुणों को अर्जित करने और दूसरों को इन्हें दिखाने पर जोर देते हैं । शिक्षा की प्रक्रिया इस 'पहचान' को विकसित करने का जरिया समझी जाती है । ये गुण पदानुक्रम में परिलक्षित होते हैं, इनका सीधा संबंध रोजगारों में इसी क्रम से होता है जैसा कि नीचे दर्शाया गया है। 'पहचान' के लिए मूल जरूरत 'अच्छा होना' और 'साक्षर होना' है । दूसरी तरफ अंग्रेजी का ज्ञान और सामान्य ज्ञान (जानकारी) भी 'पहचान' बनाने के लिए जरूरी है । जो लम्बे समय तक पाठशाला में ठहरता है वह सफलता पूर्वक इस श्रेणी तक पहुंच सकता है । साथ ही, वह 'बड़ा आदमी' बनने के अवसरों को भी बेहतर बना सकता है ।

मैं पहले साक्षरता, और स्कूली विषयवस्तु की महत्ता को लेकर बच्चों के विचार प्रस्तुत करुंगी । और फिर 'अच्छे बनने' के गुण के विश्लेषण पर वापस आऊंगी जो इस पहचान का मूल है ।

साक्षरता

जैसा कि शिक्षकों और अन्य छात्रों के द्वारा तिरस्कारपूर्ण तरीके से बताया जाता है या फेलियर खुद बताते हैं; फेल होने के पीछे एक ही कारण है कि वे बच्चे पढ़ाई लिखाई में अब तक सीखे नहीं हैं । कक्षा चार में वो छात्र जो फेलियर के नाम से जाने जाते हैं, उनके बारे में माना जाता है कि (कक्षा 5 में कोई भी फैलियर नहीं है । जो लड़के पांचवी कक्षा उत्तीर्ण नहीं कर सकते - खासकर वे जो अभी तक साक्षर नहीं हुए, उन्हें कक्षा चार में रखा जाता हैं ताकि पाठशाला अपनी पांचवी की अंतिम परीक्षा में शत प्रतिशत परिणाम दर्शा सके । कक्षा एक और दो के लिए अनिवार्य प्रोत्साहन नीति में यह सुनिश्चित है कि शुरूआती कक्षाओं का कोई बच्चा अनुत्तीर्ण नहीं होगा।) जल्दी ही वह स्कूल छोड़ देगा । चौथी कक्षा मे फेल छात्र इरशाद का अपने बारे में कहना है, ''मुझे नौकरी नहीं मिलेगी । मुझे तो पढ़ना भी नहीं आता । मार खानी पड़ेगी, और क्या ?''

साक्षरता स्कूल से हासिल होने वाली पहली चीज है और किसी भी प्रकार की नौकरी पाने के लिए यह एक मात्र पूर्ण रूप से आवश्यक चीज है । (नौकरी के लिहाज से गणित को बहुत महत्वपूर्ण नहीं समझा जाता, केवल दैनिक जीवन में हिसाब किताब रखने के लिए इसे जरूरी माना गया । गणित सीखने का कारण यह बताया गया कि हम अपना हिसाब रख सकते हैं ।)

अनपढ़ होने के अपमान की समझ मुझे तीजन बाई की जीवनी के वर्णन के दौरान मिली । जो स्कूल के एक अध्यापक ने अपनी कक्षा को बताई । तीजन बाई 'पण्डवाणी' की जानी मानी कलाकार हैं । इस अध्यापक ने अपने विद्यार्थियों को तीजन बाई की जिंदगी और उपलब्धियों के बारे में कई बातें बताईं कि वह मध्य प्रदेश के एक पिछड़े ग्रामीण इलाके से थी और निम्न जाति की महिला थी । तब उसने यह प्रकरण बताया कि उसे एक पत्र अपने हस्ताक्षर करने के लिए दिया गया। अपनी आवाज को ऊंचा उठाकर अंतिम चरण में एक तिरस्कार के साथ उसने कहा, ''उसने वहां अंगूठा लगा दिया । अंगूठा अनपढ़ की पहचान है ।'' इस एक वाक्य के जरिये वह नाटकीय रूप से उसकी उपलब्धियों से विद्यार्थियों को दूर ले जाता है, मानो वह कह रहा हो कि उसकी वास्तविक पहचान यह है कि वह अनपढ़ है और इसलिए सम्मानीय नहीं है।

सामाजिक शिष्टाचार : 'बोलचाल'

साक्षर होने के साथ-साथ, बोल-चाल सीखना पढ़ाई का दूसरा पहलू है । यह खासकर सामाजिक संदर्भों में विशेष महत्वपूर्ण है जहां बच्चे गांव से आते हैं और बच्चों को तिरस्कारपूर्ण भाव से 'गंवार' कहा जाता है । बच्चों के लिए सही तरह से हिंदी बोलना बहुत महत्वपूर्ण माना जाता है, घर पर वे हरियाणवी बोलते हैं जो हिंदी का तद्भव रूप माना जाता है । उनके शिक्षक उनका उच्चारण प्राय: ठीक करते हैं। ''उच्चारण गलत हो जाता है । पढ़े लिखे लोगों के बीच भी शुद्ध शब्दों को अशुद्ध बोलते हो । यह शर्म की बात है । अनपढ़ लोगों की तरह बोलते हो ।'' पाठशाला में प्रार्थना सभा के दौरान या मासिक बाल सभा के दौरान शिक्षक बच्चों को इस बात के लिए प्रोत्साहित करते हैं कि वे आगे आएं और कविताएं, गीत, नृत्य इत्यादि प्रस्तुत करें ताकि वे सीख सकें कि लोगों के बीच अपने आपको कैसे पेश किया जाता है । आत्म विश्वास और मानक हिन्दी का ज्ञान इन गांव के बच्चों के लिए जरूरी माना जाता है क्योंकि वह उन्हें गांव से बाहर शहर में जाने की काबलियत देने वाला समझा जाता है । इसके विपरीत शहर में पले बढ़े बच्चों के बारे में यह माना जाता है कि उन्हें तो यह सहूलियत पहले से ही अपने आप मिली हुई है । वास्तव में, अलीपुर के स्कूल को दूरस्थ गांवों के स्कूलों की बजाय काफी बेहतर माना जाता है क्योंकि यह शहर से काफी नजदीक है और इसे शहर से होने वाले फायदे भी मिले हुए हैं ।

अभिभावक अपने बच्चों (लड़के लड़कियों दोनों को) इस गांव के स्कूलों में भेजते हैं ताकि वे सही बोलचाल सीख सकें ।

जानकारी

स्कूल में जानकारी या सामान्य ज्ञान ध्यानाकर्षण के लिए एक महत्वपूर्ण 'तत्व' था। हिन्दी ज्ञान साक्षरता के लिए महत्वपूर्ण

है । स्कूली विषयों में विज्ञान और सामाजिक अध्ययन को शामिल किए जाने का मतलब यह माना जाता है कि वे सामान्य ज्ञान उपलब्ध कराती हैं।

- यह सब नौकरी के लिए जरुरी क्यों है ?

बिजेन्द्र : पढ़ने-लिखने के लिए ।

- सामाजिक विज्ञान और विज्ञान क्यों जरूरी है ?

बिजेन्द्र : मैं नहीं जानता ।''

जोगी और सतीश हमारी तरफ मुड़ते हैं । मैं यही प्रश्न उनसे पूछती हूं ।

जोगी : यदि वे कुछ पूछते हैं तो हम कुछ बता पाने की स्थिति में नहीं होते हैं । क्या ऐसा नहीं है ?

सतीश : 'और यदि हम उनके सवाल का जवाब नहीं दे पाएं तो क्या वे हमें नौकरी दे देंगे ।

अध्यापक प्राय: बच्चों से सामान्य ज्ञान संबंधी प्रश्न पूछते रहते थे । ''मैं आपसे सामान्य ज्ञान के पांच प्रश्न पूछता हूँ; दुनिया की सबसे ऊंची चोटी कौनसी है और यह कौनसे देश में है ?'' वे बच्चों को बताते थे कि ये वो चीजे हैं जो बच्चों को जाननी चाहिए। बच्चे भी एक दूसरे से आपस में प्रश्नोत्तर पूछते हैं : ' चांद किस दिशा में उगता है ? भारत का क्षेत्रफल कितना है ?'' अध्यापकों की तरह वे भी उस स्थिति में गर्वपूर्ण संतुष्टि के साथ प्रसन्न होते थे जब कोई भी उनके सवाल का जवाब नहीं दे पाता था । जब मैंने पूछा कि ऐसा ज्ञान क्यों महत्त्वपूर्ण है ? उन्होंने कहा, ''यह सामान्य ज्ञान है'' यह दर्शाते हुए कि यह कुछ ऐसा है जिसकी जानकारी की उम्मीद उनसे की जाती है । दूसरा बच्चा कहता है, ''गुरुजी पूछ सकते हैं, इन्सपेक्टर इंटरव्यू में पूछ सकता है और परीक्षा में भी आ सकता है ।'' बच्चे यह उम्मीद करते भी प्रतीत होते हैं कि नौकरियों के लिए साक्षात्कार के दौरान उनसे ऐसे प्रश्न पूछे जा सकते हैं । ''जब हम बड़े होंगे और कोई हमसे पूछेगा कि पहिए का अविष्कार कैसे हुआ तो हमें बताना पड़ेगा ।'' (प्राइवेट स्कूल के छात्र)। ऐसे सवालों का जवाब नहीं दे पाने पर गलत असर पड़ेगा । इससे हमारी पहचान और यहां तक कि नौकरी पर भी गलत असर पड़ सकता है ।

अंग्रेजी

अंग्रेजी सीखना स्कूलों में पढ़ने का सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य माना गया । पांचवी कक्षा का छात्र विकास कहता है, आजकल अंग्रेजी का फैशन चल रहा है । इससे हमें अंग्रेजी जानना फायदेमन्द हैं, वह अपनी समझ के अनुसार अंग्रेजी से प्राप्त ज्ञान के फायदे भी बताता है । हिन्दी से पढ़ा लिखा होने को सम्मानजनक नौकरी पाने के लिए पर्याप्त नहीं माना जा सकता और निश्चित रूप से किसी के 'बड़ा आदमी' बनने के लिए इसे काफी नहीं माना जाता । हर कोई प्राइवेट स्कूल में जाना चाहता है जहां शुरुआती दौर से अंग्रेजी पढ़ाई जाती है । हिन्दी माध्यम का सरकारी स्कूल दूसरा विकल्प है जहां अंग्रेजी कक्षा 5 के बाद पढ़ाई जाती है। केवल इस एक कारण से पांचवी कक्षा के सभी छात्र आगे बड़े स्कूल में जाने की सोचते हैं । हाल ही पांचवी कक्षा पास कर चुका छात्र अजय गांव में अपने एक मित्र से मिला और कहा, ''ऐ पिल्ला, अपने पिता से कहो कि बड़े स्कूल में तुम्हारा नाम जल्दी से लिखवा दें। हम पहले से अंग्रेजी सीख रहे हैं। फिर समझना मुश्किल हो जाएगा।'' अंग्रेजी माध्यम स्कूलों में पढ़ने वाले बच्चे और उनके अभिभावक यह सोचते थे कि वे अन्य ग्रामीणों की अपेक्षा महत्त्व के लिहाज से भिन्न हो रहे हैं । और यह उनकी विशिष्टता से जुड़ा है । अंग्रेजी माध्यम वाले गांव के 'दुष्प्रभावों' से बचने की कोशिश करते हैं । इन बच्चों को दूसरे बच्चों के साथ खेलने और सहयोग करने से रोका जाता था जो अंग्रेजी माध्यम के स्कूलों में नहीं पढ़ते । जैसे कि यदि वे ऐसा करते हैं तो अंग्रेजी माध्यम से प्राप्त उनकी शिक्षा के संभावित फायदे कम हो सकते हैं ।

ऐसे ही जिन स्कूलों में अंग्रेजी शुरुआती कक्षाओं से ही एक विषय के रूप में पढ़ाई जाती है, वहां के बच्चे भी अपने आपको विशिष्ट मानते हैं । वास्तव में वहां पाठशालाओं के कई प्रकार थे। और बच्चे उन लाभों के बारे मे काफी जागरुक थे जो उनके साथियों को अन्य स्कूलों से मिले ।

अमित : 'यदि हम सरकारी स्कूल में जाते हैं तो हम अंग्रेजी नहीं सीख सकते ।'

- लेकिन वे वही चीज हिन्दी में सीखते हैं ।

अजय : हम उनकी समझ सकते हैं लेकिन वे हमारी नहीं समझ सकते ।

अमित : वह भी अच्छा है लेकिन कम अच्छा है । इसमें दिमाग में ज्यादा कंट्रोल कर सकते हैं। (प्राइवेट स्कूल के पांचवी कक्षा के छात्र)

वे यह भी मानते हैं कि शिक्षा का माध्यम उनके द्वारा ग्रहण की जा रही शिक्षा में गुणात्मक भिन्नता लाता है। सरकारी स्कूलों में शिक्षा पर्याप्त अच्छी नहीं है क्योंकि यह हिन्दी माध्यम में है । हाल ही जब पास के एक निजी स्कूल ने अंग्रेजी से हिन्दी माध्यम अपनाया तो गांव में हर किसी ने इसकी चर्चा की । बच्चों ने भी स्कूल में इस तरह बातचीत की ''हिन्दी माध्यम स्कूल हो गया है। अब डाउन हो गया है ।'')

अच्छा होना

अच्छा बनना भी इसी श्रेणी में आता है और प्रक्रिया तथा उद्देश्य के लिहाज से यह अवधारणा पढ़ाई की विचारधारा के केन्द्र में है । यह संभवतया वैयक्तिक विकास से जुड़ा विचार है, ''यदि

हम अच्छे हृदय के साथ तपस्या करते हैं तो हमें पढ़ाई की जरुरत नहीं होगी ।'' (दीपक चौथी कक्षा का छात्र) । पढ़ाई से और जो भी हासिल हो, अध्यापक निश्चित रूप से यह विश्वास करते हैं कि बच्चों को नैतिक शिक्षा प्रदान करना, उन्हें अच्छे नागरिक बनाना, पाठशाला का पहला और महत्त्वपूर्ण राष्ट्रभक्ति पूर्ण कर्तव्य है। यह मुख्य मूल्य है । एक बार, एक विद्यार्थी ने अपने अध्यापक से पूछा कि उसका सहपाठी क्या करेगा ? वह तो पढ़ता भी नहीं तथा निश्चित रूप से फेल हो जायेगा। शिक्षक ने प्रत्युत्तर में कहा, ''तो क्या हुआ? यह कोई बात नहीं है । वह कुछ और जरिए से पैसा कमा सकता है । यह महत्त्वपूर्ण है कि उसकी बातचीत अच्छी और मधुर हो ।'' एक अर्थ में, अध्यापकों के लिए नैतिक मूल्य बड़ों के प्रति सम्मान, आज्ञाकारिता और ईमानदारी है और वे हर अवसर पर इन मूल्यों का गुणगान करने से नहीं चूकते ।

विद्यार्थी भी इन भावनाओं का निष्ठा के साथ अनुसरण करते हैं । खासकर तब जब वे अपने शिक्षकों से सम्पर्क में हों : ''अच्छा बनने के लिए पढ़ रहे हैं । बड़ा आदमी बनने के बारे में कौन कह सकता है ? कुछ लोगों की किस्मत खुल जाती है ।'' (विपिन - कक्षा-5) मैं शिक्षा के इस पक्ष पर अगले लेख में चर्चा करुंगी जिसमें बच्चों और शिक्षकों की पहचान और भूमिका उद्घाटित होती है ।

शिक्षा - एक सांस्कृतिक पूंजी के रूप में

साक्षरता को लेकर या अंग्रेजी के ज्ञान को लेकर, बच्चों की बातचीत से साफ पता चलता है कि वे वयस्कों द्वारा पूर्व निर्धारित स्थितियों में ही अपने आप को शिक्षा के साथ जोड़ते हैं। बच्चे जागरुक थे कि उस संसार जिसमें वे पल रहे हैं उसका स्वरूप पहले से ही वयस्कों ने तय किया है । लेकिन जिन वयस्कों के बारे में बच्चे जिक्र कर रहे थे, वे सभी जाने-पहचाने गांव के बड़े लोग ही नहीं थे। वे भावी परिदृश्य के बारे में भी बात करते हैं जहां उन्हें, वयस्क के रूप में स्वयं अन्य लोगों, संभावित नियोजकों तथा वरिष्ठ लोगों तथा रोजगार और पदोन्नति को नियंत्रित करने वाले लोगों के साथ व्यवहार करना है जो कि बड़े आदमी हैं । वे प्रश्न पूछेंगे, वे उनसे अंग्रेजी में बात करेंगे, वे उनकी जांच करेंगे और रोजगार और पदोन्नति के लिए उनकी काबिलियत का आकलन करेंगे। बच्चे यह महसूस करते हैं कि स्कूल की पढ़ाई उन्हें ज्ञान और कौशल उपलब्ध कराती है जिसकी उन्हें इन सामाजिक अन्तक्रियाओं तथा परीक्षाओं में सफल होने के लिए जरूरत है । इससे वे सामाजिक वातावरण को अपने पक्ष में कर पाने में सक्षम हो सकेंगे। इन संबंध में बेहतर स्थिति हासिल करने के लिए एक 'शिक्षित आदमी' की छवि उन्हें इस लायक बनायेगी ।

नौकरी के लिए बातचीत करने में कौशल और ज्ञान की भूमिका द्वितीयक या संयोगात्मक है । ''अंग्रेजी में बोलना जरुरी है। बस नम्बर को ..... पता नही ।'' (कक्षा 5 का छात्र)

जब रवीन्द्र यह कहता है, तो वह अंग्रेजी को एक सामाजिक जरूरत के रूप में दर्शाता है । बल्कि वह यह नकाराता है कि अंग्रेजी व्यावहारिक और कार्यशील जरूरत (जैसे बस नम्बर को पढ़ने के लिये) है । और वह सामाजिक जरुरत को प्राथमिकता देता है । इसी तरह एक फेल छात्र सोनू साक्षरता को भी एक ऐसी ही सामाजिक क्रियात्मकता के रूप में मानता है, ''यदि पढ़ा-लिखा आदमी आयेगा और पूछेगा, तो हम बोल नहीं पायेंगे । लिखवाएगा तो नहीं लिख पायेंगे ।''

शिक्षा समाजशास्त्री इन गुणों, विशिष्टताओं और ज्ञान को ''सांस्कृतिक पूंजी'' मानने का सुझाव देते हैं जो कि व्यक्ति की जन्म से ही विशेषता रही है और जो उसे पढ़ाई में दूसरों को दे सकते हैं। उदाहरण के लिए , यदि स्कूल की भाषा घर में बोली जाए, तो बच्चे को फायदा होता है । इसी तरह, बच्चे के लिए पुस्तकों तथा अन्य सामग्री की उपलब्धता तथा शैक्षणिक सफलता वाली जीवन शैली से भी लाभ मिलता है । इस प्रकार 'सांस्कृतिक पूंजी' का 'आर्थिक पूंजी' के रूप में 'परिवर्तन' अथवा 'विनिमय' किया जा सकता है । स्कूल में सफलता को बेहतर रोजगार पाने या बेहतर रोजगार और सम्पर्कों के लिए प्रभावित करके 'सामाजिक पूंजी' में बदला जा सकता है ।

बच्चों के अध्ययन (आकलन) से यह जाहिर होता है कि वे सांस्कृतिक पूंजी के रूप में पाठशाला को स्रोत मानने के मामले में बड़े संवेदनशील हैं । खासकर अंग्रेजी और सामान्य ज्ञान की जानकारी पाने में । वे सरकारी नौकरी के जरिये इसे सामाजिक और आर्थिक पूंजी के रूप में बदलने के बारे में जागरूक हैं ।

पढ़ाई क्यों महत्त्वपूर्ण है, इसके लिए सब कारण भविष्य को ध्यान में रखकर दिये जाते हैं - वयस्क होने पर किये जाने वाले कामों के संदर्भ में । स्कूल की सांकेतिक दुनियां से बाहर, साक्षरता सामान्य ज्ञान और अंग्रेजी का बच्चों के तात्कालिक जीवन अनुभव से कोई संबंध प्रतीत नहीं होता ।

और भी, स्कूली पढ़ाई बच्चों को वे माध्यम उपलब्ध कराती लगती हैं जिनके जरिये बच्चा बदली हुई परिस्थितियों के अनुभव स्वयं को ढाल सके । इन परिस्थितियों को बदलने वाले माध्यम के रूप में पढ़ाई को नहीं देखा जाता । सशक्तिकरण को सामाजिक परिवेश पर नियंत्रण पाने एवं अपनी सामाजिक प्रगति के रूप में देखा जाता है न कि सामाजिक बदलाव के माध्यम के रूप में ।◆